हम अंतिम चौथी पारी में हैं

क्या आपने कभी सोचा है कि चौथी पारी क्या होती है? जैसा कि हम मत्ती 14:25 में पढ़ते हैं:

मत्ती 14:25 – “रात के चौथे पहर में यीशु समुद्र पर उनके पास चलकर आने लगे।
26 शिष्य ने जब उन्हें समुद्र पर चलते देखा तो डरकर कहा, ‘यह
भूत है।’ और डर से चिल्लाए।”

पुराने समय के शहर आज के शहरों से अलग थे। पुराने शहरों को चारों तरफ़ ऊँची दीवारों से घेरा जाता था। अक्सर ये दीवारें इतनी ऊँची होती थीं कि उनके बड़े द्वारों से घोड़े की गाड़ी भी आसानी से गुजर सकती थी। उदाहरण के लिए, यह्रिको की दीवारें और अन्य बड़े शहरों जैसे बबेल और यरूशलेम की दीवारें भी इसी तरह बनी थीं। दीवारों का मुख्य उद्देश्य दुश्मनों से सुरक्षा देना था। जो शहर बिना दीवार का होता, उसे कमजोर शहर माना जाता था।

रात में शहर के मुख्य द्वार बंद कर दिए जाते थे। इसके अलावा दीवारों के बीचों-बीच और किनारों पर ऊँचे रक्षकों के टावर बनाए जाते थे। इन टावरों पर रात की पारी में चौकसी करने वाले प्रहरी तैनात होते थे।

प्रहरी पारी में काम करते थे – तीन घंटे की चार पारी:

पहली पारी: शाम 6 बजे से रात 9 बजे

दूसरी पारी: रात 9 बजे से आधी रात 12 बजे

तीसरी पारी: आधी रात 12 बजे से सुबह 3 बजे

चौथी पारी: सुबह 3 बजे से सुबह 6 बजे

इस प्रकार, रात के किसी भी समय घटना घटती, तो उसका समय पारी के अनुसार पहचाना जाता था, जैसे आज हम घंटों और मिनटों के हिसाब से देखते हैं।

इसी तरह, हम ईसाई भी आत्मा में प्रहरी हैं। हम प्रभु के लौटने की प्रतीक्षा कर रहे हैं, इस दुनिया के अंधकार और पाप के बीच। हमें नहीं पता कि वह कब आएंगे – उन्होंने पहली, दूसरी, तीसरी या चौथी पारी में कब आएंगे। हम वर्तमान में अंतिम सातवें चर्च में हैं (जैसा कि प्रकटीकरण 3:14 में लाओदिकिया चर्च के बारे में लिखा है)। यही हमारी अंतिम चौथी पारी है। हमें पता नहीं दिन, तारीख या साल, लेकिन समय और युग को हम समझ सकते हैं – यह प्रभु की दूसरी वापसी का समय है।

लूका 12:36-40 –

“और तुम उस समय तत्पर रहो, जैसे तुम्हारा स्वामी शादी से
लौटे; ताकि जब वह आए और खटखटाए, तो तुम तुरंत खोलो।
37 धन्य हैं वे दास जो उनके स्वामी लौटने पर जाग रहे हों;
सत्य में कहता हूँ, वह उन्हें बैठाकर भोजन परोसेंगे।
38 यदि वह दूसरी पारी में आए, या तीसरी पारी में आए और उन्हें जागते पाए, तो वे धन्य हैं।
39 यह जान लो कि यदि घर का मालिक चोरी की घड़ी जानता, तो वह जागकर अपने घर को नहीं खोने देता।
40 इसी तरह, तुम भी तैयार रहो, क्योंकि मानव पुत्र उस समय
आएगा जब तुम उसे न सोचो।”

हम अब बहुत खतरनाक समय में हैं। जैसे पुराने शहरों के प्रहरी चौकसी करते थे, वैसे ही हमें भी अपनी आत्मा में सजग रहना है। लेकिन आश्चर्य की बात है कि हममें से कई लोग इसे हल्के में लेते हैं। हम दुनिया के कामों में व्यस्त रहते हैं और प्रभु के प्रति ध्यान नहीं देते।

प्रभु हमें आंखें दें कि हम अपने समय और चौथी पारी में होने का महत्व समझ सकें। यही अंतिम समय है और यह पारी तब तक समाप्त नहीं होगी जब तक मसीह लौटकर नहीं आते। समय तेजी से बीत रहा है।

क्या आपने स्थिर खड़े रहकर अपने उद्धार की तैयारी की है? प्रभु हमें यह समझने की आंखें दें।

मैरानाथा!

अगर आप चाहें, तो इन अच्छी खबरों को दूसरों के साथ साझा करें। और यदि आप चाहते हैं कि हम आपको ये अध्ययन ईमेल या व्हाट्सएप पर भेजें, तो कृपया नीचे कमेंट बॉक्स में संदेश भेजें या इस नंबर पर कॉल/व्हाट्सएप करें: +255 789001312।

हमारी चैनल से जुड़ें >> [WHATSAPP]

Share on:
WhatsApp